ब्रह्मांडीय ऊर्जा एवं वास्तु

ब्रह्मांडीय ऊर्जा जीवन शक्ति के रूप में पूरे ब्रह्मांड में मौजूद है। यह हमेशा प्रवाहमान है, चाहे जो भी हो रहा। जीवन में शांति के लिए यह आवश्यक ऊर्जा है। इसके बिना हम इस संसार में रह नहीं सकते। अपने स्व के साथ शांत होकर वर्तमान में रहते हुए यह ऊर्जा प्राप्त की जाती है। यह दिमाग की ऐसी स्थिति है जिसमें शांति, प्यार और खुशी तीनों एक धरातल पर होती हैं।

ब्रह्मांडीय ऊर्जा हमारे सारे क्रियाकलापों और स्थितियों के अनुसार प्रतिक्रिया करने का आधार है। जब हम शांत चित्त होकर सो रहे होते है, तब यह ऊर्जा थोड़ी मात्रा में हमें मिलती है। अपने जीवन से नकारात्मकता, अहंकार, आत्म बड़ाई आदि को दूर कर, दिमाग, शरीर और चित्त को हर प्रकार के बंधन से मुक्त कर और वास्तविक ध्यान एवं प्राणायाम कर इस ऊर्जा को प्राप्त किया जा सकता है।

निम्नलिखित कारणों से ब्रह्मांडीय ऊर्जा आवश्यक है :

1 नियमित जीवन को सुचारू रखने के लिए।

2 प्रसन्न एवं स्वस्थ जीवन जीने के लिए।

3 ज्ञान प्राप्ति हेतु।

4 जीवन की हर स्थिति में पूर्णतः लिप्त होने के लिए।

5 अपनी चेतना के विस्तार के लिए

चाहे वह घर हो, फैक्ट्री हो, कॉमर्सियल भवन हो या हाउसिंग कॉम्पलेक्स हो, सब

को ब्रह्मांडीय ऊर्जा की जरूरत पड़ती है, ताकि उन्नति और समृद्धि हासिल की जा सके। हम जहां रहते हैं, वहां ब्रह्मांडीय ऊर्जा का आसानी से प्रवाह हो सके, इसके लिए ब्रह्मांडीय ऊर्जा और भवन में संबंध बनाने के लिए हम कई उपाय करते हैं। वास्तु के स्थापित एवं मान्य सिद्धांतों का उपयोग करने का उद्देश्य यह होता है कि भवन में ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रवेश सुनिश्चित हो सके ताकि भवन में रहने वाले ऊर्जावान बने रहें।

हमारे लैंडस्केप पर जो ढेर सारी गतिविधियां हो रही हैं, उनके कारण हमारे भवनों में प्रचुर ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्रवेश नहीं कर पाती और इसी कारण से भवन में नकारात्मक ऊर्जा एकत्र होती रहती है। अगर घर में नकारात्मक ऊर्जा ज्यादा हो और सकारात्मक ऊर्जा कम, तो इससे खुशियां उजड़ जाती हैं और जीवन पर भी खतरा पैदा होने लगता है। अतः हमें अनिवार्य रूप से ऐसे उपाय करने चाहिए कि भवन में पर्याप्त ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्रवेश करे और हर तरफ फैले।

ऐसा ही एक उपाय है पिरामीड का उपयोग। यह वातावरण से ब्रह्मांडीय ऊर्जा एकत्र करता है और भवन में चारो तरफ फैलाता है, यही पिरामीड की अनोखी खासियत है।

कई मंदिरों में गोपुरम होते हैं। इनकी आकृति पिरामीड के समान होती है और नुकीला हिस्सा आसमान (ब्रह्मांड) की ओर होता है। यही नुकीला हिस्सा ब्रह्मांडीय ऊर्जा एकत्र करता है और इसे वहां फैलाता है जहां भगवान की मूर्ति स्थापित होती है। यही

कारण है कि मंदिरों में भगवान की मूर्ति के चारो तरफ सकारात्मक ऊर्जा भरी रहती है। मंदिरों में खुशी और ढेर सारी सकारात्मक ऊर्जा इसी कारण मिलती है। और यही कारण है कि परंमपरागत वास्तु शास्त्र के अनुसार मंदिर के आसपास घर नहीं बनाना चाहिए, क्योकि मंदिर जितनी सकारात्मक ऊर्जा ग्रहण कर लेता है, उसके बाद मंदिर के पास बने घर के लिए पर्याप्त सकारात्मक ऊर्जा बचती ही नहीं है।

अच्छी खबर है कि आज हम घर, फैक्ट्री या कॉमर्सियल भवन की सकारात्मक ऊर्जा को नाप सकते हैं और उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जहां ऐसी ऊर्जा की कमी है, या है ही नहीं।

पिरामीड को ब्रह्मांडीय ऊर्जा का माइक्रोप्रोसेसर कहा जा सकता है। यह ऐसा उपकरण है जो सूर्य, पृथ्वी और चांद की ऊर्जा सर्किट से अपने आप जुड़ जाता है। यह अपने अनोखे डिजाइन के कारण ब्रह्मांडीय ऊर्जा एकत्र कर पूरे घर में फैलाता रहता है। पिरामीड का आकार कितना बड़ा हो, यह भवन के आकार पर निर्भर करता है और कोई विशेषज्ञ ही इसके बारे मे सलाह दे सकता है।

लेखक इंजीनियर हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में उच्चाधिकारी रह चुके हैं। फिलहाल वे भूदोष वास्तु सलाहकार के रूप में हैदराबाद मे रह रहे हैं। उनसे www.karmicvastu.com या उनके मोबाइल नम्बर 099893-00733 पर संपर्क किया जा सकता है।